Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2019 GISRRJ | Volume 2 | Issue 5 | ISSN : 2582-0095

ऋग्वेद में विवेचित आभूषण

डॉ. दिवाकर मणि त्रिपाठी
असिस्टेंट प्रोफेसर (संस्कृत)
वी. यस. ऐ वी पी.जी कालेज
गोला, गोरखपुर

शोध आलेख सार– ऋग्वेदकाल से लेकर सूत्रकाल तक भारतीय स्त्री पुरुष दोनों आभूषण धारण करते थे। ये आभूषण प्रायः स्वर्ण तथा मूल्यवान् रत्नों के बनते थे। ऋग्वेद में "हिरण्यैः" शब्द का व्यवहार साधारण रुप से स्वर्ण के अलङ्कारों के हेतु हुआ है। ऋग्वेद में अनेक आभूषणों का विवेचन है।

मुख्य शब्द– ऋग्वेदकाल, आभूषण, स्वर्ण, सांस्कृतिक, स्त्री, पुरुष, सूत्रकाल।

ऋग्वेद के 1028 सूक्तों में, हमारी सांस्कृतिक सामग्री भरी पड़ी है। अन्य प्रकार की सामग्री के साथ-साथ आभूषण सम्बन्धी सामग्री भी उपलब्ध होती है। ऋग्वेदकाल से लेकर सूत्रकाल तक भारतीय स्त्री पुरुष दोनों आभूषण धारण करते थे। ये आभूषण प्रायः स्वर्ण तथा मूल्यवान् रत्नों के बनते थे। ऋग्वेद के काल में आभूषण सुन्दरता की अभिवृद्धि की दृष्टि से धारण किये जाते थे।[1]

ऋग्वेद में "अरंकृत"[2] शब्द उपलब्ध होता है जो "अलंकृत" का प्राचीन रुप है। आचार्य पाणिनि के मतानुसार भी प्राचीन "र" के स्थान पर कालान्तर में "ल" हो जाता है। यह "आभूषित" करने के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। अतः ऋग्वेदकाल में आभूषण धारण किये जाते थे और आभूषणों से सुशोभित या सजे हुए को "अरंकृत" कहते थे। जैसे प्रस्तुत मंत्र में सोम को अरंकृत कहा गया है। ऋग्वेद में आभरः"[3] शब्द उपलब्ध होता है जिससे "आभारण" शब्द बना है। यह शब्द भी अलंकार के अर्थ में प्रयुक्त होता था। ऋग्वेद में "हिरण्यैः" शब्द का व्यवहार साधारण रुप से स्वर्ण के अलङ्कारों के हेतु हुआ है।

"पत्नीव पूर्वहूतिं वावृधध्या उषासानक्तापुरुधा विदाने।
स्तरीनत्किं व्युतं वसाना सूर्यस्य श्रिया सुदृशी हिरण्यैः।।"[4]

(यथा पतिदेव के प्रथम आवाहन करने पर पत्नी शीघ्र चली आती है, ठीक वैसे ही अहोरात्र देवता हमारे प्रथम आवाहन पर शीघ्र आवें। शत्रुमर्दन सूर्य की तरह उषा देवी हिरण्य के आभूषणों से युक्त होकर सूर्य के समान शोभा धारण करे।)

इस मन्त्र से यह भी संकेत उपबल्ध होता है कि विवाह के अवसर पर वधु विविध प्रकार के आभूषणों को धारण करती थी। विवाह के अवसर पर वर को धारण कराये जाने वाले आभूषणों को भी हिरण्यैः कहा जाता था। प्रस्तुत मन्त्र में अवश्य के सुवर्ण निर्मित आभूषणों का वर्णन इस प्रकार से है—

''यदश्वाय वास उपस्तृणन्त्यधीवासं या हिरण्यान्यस्मै।

संदानमर्वन्तं षड्वीशं प्रिया देवेष्व यामयन्ति।।''[5]

जिस वस्त्र से अश्व को आच्छादित किया जाता है उसको जो सुवर्णनिर्मित आभूषण धारण कराये जाते हैं, जिन साधनोंके माध्यम से उसके पाद और मस्तक बाँधे जाते हैं, वे सब देवों को प्रिय हों, ऋत्विक् देवों को यह सब वस्तुएँ प्रदान करते हैं।

इस तरह यह सपष्ट हो जाता है कि पुरुष और स्त्रियाँ दोनों ही वैदिक युग में आभूषणों के शौकिन थे, अलङ्कार धारण करते थे और ये आभूषण प्रायः सुवर्णनिर्मित होते थे।

आभूषण केवल धातु के नहीं बनते थे अपितु ये रत्नों के भी बनाये जाते थे। रत्न शब्द ऋग्वेद के प्रथम मन्त्र से ही प्राप्त होने लगता है। कुछ एक स्थलों में यह आभूषणओं के अर्थ में भी प्रयुक्त हुआ है। जैसे-**''प्रजापतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्। दधद्रत्नानि दाशुषे।**[6]

मणि शब्द ऋग्वेद में उपलब्ध होता है। अधेलिखित मंत्र मे अन्य आभूषणों के साथ ग्रीवा में धारण करने के हेतु मणि प्रदान करने की विश्वदेव से याचना की गयी है-

''हिरण्यकर्णं मणिग्रीवमर्णस्तन्नो विश्व वरिस्यन्तु देवाः।

आर्योगिरः सद्य आ जग्मुषी रोस्राश्वाकन्तभयेष्वस्मे।।[7]

हे विश्वेदेव! हमें हिरण्य का कर्ण का आभूषण और ग्रीवा के हेतु मणि की माला और रुपवान् पुत्र दो। हे विश्वेदेव! हम आपकी स्तुति करते हैं और आपको हव्य प्रदान करते हैं।

ऋग्वेद में मोती के लिए ''कृशन्'' शब्द हमें उपलब्ध होता है। मोती सावित्री के रथ में लगा हुआ कहा गया है। अश्व को भी सजाने के लिए मोती का व्यवहार किया जाता था।

ऋग्वेद में सिर के आभूषणों का वर्णन- ऋग्वेद में हमें सिर के आभूषणों में स्तुका, ''स्तूप, शिप्र, शृङ्ग, करीर, ओपश और स्त्रज् शब्द मिलते हैं। स्तुका का वैदिक इण्डेक्स में शिखा या केश की चोटी अर्थ है। स्तूप शब्द का अर्थ वैदिक इण्डेक्स में शिखा की गाँठ या मस्तक पर का जूड़ा किया गया है। इससे यह धारणा बनती है कि सिर पर जब स्तूप का वर्णन मिलता है तो वह कोण के आकार का (नुकीली टोपी) आभूषण समझना चाहिये। ऋग्वेद में मन्त्र इस प्रकार है-

''जुषस्व नः समिधमग्ने उद्य शोचा बृहद्यजतं धूममृण्वन।

उपस्पृश दिव्यं सानु स्तूपैः संरश्मिभिस्ततनः सूर्यस्य।।[8]

हे अग्निदेवता! काष्ठ को प्राप्त करके तेजस्वी बन, इस बृहत् यज्ञ को उज्जवल कर तथा अपने धूम से शत्रु को कम्पित करने वाली शक्ति प्रदान कर सूर्य के स्तूप नामक आभूषण से निकली हुई रश्मि. के समान अपने तेज का विस्तार कर।

इस मन्त्र से यह अनुमान होता है कि स्तूप मस्तक के एक आभूषण का नाम था और इसे पुरुष धारण करते थे और प्रायः यह सुवर्ण का होता था। यदि यह सुवर्ण का न होता तो इसमें से निकलने वाली चमक को सूर्य की स्वर्ण रुपी किरणों से उपमा न दी होती। ऋग्वेद में एक दूसरा शब्द शिप्र मिलता है। निम्नलिखित मन्त्रों से यह स्पष्ट हो जाता है कि यह सिर का आभूषण था और धातु का बना होता था तथा टोपी के समान आकार का था-

अंसेषु व कृष्टयः पत्सु खादयो वक्षः सू रुक्मा मरुतो रथे शुभः।

अग्निभ्राजसो विद्युतो गभत्योः शिप्राः शीर्षसु विततता हिरण्ययीः।।[9]

यहाँ शिप्र सिर पर है, बड़ा है हिरण्य का है इस मुकुट भी कहा जा सकता है। ऐसा विदित होता है कि पुरुष कभी-कभी अपने मस्तक पर शृङ्ग भी धारण करते थे। इनको धारण करने के लिये मुकुट में ही स्थान बनाया जाता रहा होगा। ऋग्वेद में इन्द्र को शृङ्गवृषो कहा गया है-

''यस्ते श्रृङ्गवृषो नपात्प्रणपतित्कुण्डपाय्यः।

न्यस्यिनदध्र आ मनः।।[10]

हे शृङ्गवृष! तुम्हारी रक्षा करने वाला जो कुण्डपायी यज्ञ है। उसको मुनियों ने प्रारम्भ कर दिया है। उपर्युक्त मन्त्र में टीकाकारों ने इन्द्र को शृङ्गवृष नामक ऋषि का पुत्र मानकर अर्थ किया है। अतः हिरण्यशृङ्ग इन्द्र ही प्रतीत होते हैं और शृंग पुरुषों के मस्तक का ही आभूषण है जो कदाचित् लड़ाई के

समय धारण किया जाता था। ऋग्वेद में "स्त्रज्" एक दूसरा आभूषण परक शब्द उपलब्ध होता है। यह कदाचित् माला का द्योतक था। स्त्रक् की रचना प्रायः फूलों से होती थी।

इस प्रकार ऋग्वेद में अनेक आभूषणों का विवेचन है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. ऋग्वेद 10/77/2
2. ऋग्वेद 1/2/1
3. ऋग्वेद 8/97/1
4. ऋग्वेद 1/22/2
5. ऋग्वेद 1/162/16
6. ऋग्वेद 1/1/1
7. ऋग्वेद 7/2/1
8. ऋग्वेद 7/2/3
9. ऋग्वेद 2/34/3
10. ऋग्वेद 8/17/31